-: द्वितीय अध्याय :-

: द्वितीय अध्याय :-

रजनी पनिकर के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय -

प्रस्तावना -

१] ठोकर -

२] पानी की दीवार

३] मोम के मोती -

४] प्यासे बादल -

५] काली लड़की -

६] जाड़े की धूप -

७] एक लड़की - दो रूप -

८] तीन दिन की बात -

९] महानगर की मीता -

१०] सोनाली दी -

११] बदलते रंग -

१२] दूरियाँ -

निष्कर्ष -

x—x—x—x—x—x

द्वितीय अध्याय

"रजनी पनिकर के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय "-

प्रस्तावना -

स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों में रजनीजी का स्थान मूर्धन्य है। उन्होंने अपनी औपन्यासिक कृतियों में आधुनिक नारी के विविध रूपों को अंकित करने का प्रयत्न किया है। आधुनिक परिवेश में बनती-बिगड़ती नारी को चितारने का उन्होंने सफल सायास किया है। आधुनिक परिवेश में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए नारी प्रयत्नशील है। इस प्रयत्न में उसे अनेक विध समस्याओं से गुजरना पड़ता है। इसका प्रखर शैली में लेखिकाने चित्रण किया है। आधुनिक नारी की स्थिति एवं गति को लेखिकाने अपने व्यक्तित्व के अनुसार उजागर किया है। ऐसी बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखिकाने अपनी कुशल कलम से कुल-मिलाकर चौदह उपन्यासों को जन्म दिया है।

रजनीजीके इन चौदह उपन्यासों में से "पानी की दीवार"और "तीन दिन की बात" इन दो उपन्यासों का पुनः प्रकाशन हुआ है। "पानी की दीवार" इस उपन्यास का लेखिका के मृत्यु के उपरान्त जनवरी १९७५ में "अपने-अपने दायरे" के नाम से पुनः प्रकाशन हुआ। और "तीन दिन की बात" यह उपन्यास "दो लड़कियाँ" नाम से सन् १९७३ में संकलित हुआ। इसलिए मैंने सिर्फ बारह उपन्यासों की इस लघु-शोध प्रबंध मे चर्चा की है।

१] <u>ठोकर -</u>

महिला कथाकार रजनीजीने "ठोकर" उपन्यास के साथ उपन्यास साहित्य जगत में अपना पहला कदम रखा। लेकिन उन्होंने पहला कदम ही इतना बड़ा भारी उठाया कि हिन्दी प्रेमियों का दिल अपनी ओर खिंचने में उसे अद्भुत सफलता प्राप्त हो गयी।

"ठोकर" की कथा एक उच्च मध्यवर्गीय शिक्षीत परिवार को लेकर चलती है। इस परिवार में प्रमुख दोन पात्र है — भाई अटल दादा और बहन मृणाल [मिनी] घर में जुही भी रहती है, जो मृणाल की सखी है, उनके यहाँ रहकर एम्.ए. का अध्ययन कर रही है। जुही के अलावा बसंत भी उनके घर रहता है। बसन्त उनके मुनीम का बेटा है। मुनीम परलोक सिधार गये। इसी कारण अब बसन्त अटल दादा के पनाह में रहता है। अटल दादाने हँसते-हँसते बसन्त की जिम्मेदारी अपने कंधेपर उठा ली है। अटल-दादा आयु से बडे नहीं है, यही "तीस वर्ष के है। गोरा रंग, ऊँचा चौडा ललाट, तेजस्वी और भाग्यशाली होने की सूचना देता।"[१] खादी का श्वेत कुरता अधिक पहनते। उन्हें देशसेवा से अधिक लगाव है। कहीं भी दंगा-फसाद हो या सांप्रदायिक झगडा वहाँ अटल दौडे चले जाते थे। प्रौढशाला में भी बडी दिलचस्पी से काम करते। परन्तु वे सही अर्थ में व्रती थे। उन्होंने जीवन में कभी धन की अभिलाषा नहीं रखी। रुपया-पैसा जितना है, वह सब पिता का अर्जित किया है। अटल धन की खतरनाक लालसा से कोसों दूर रहें।

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : २.

मृणाल सचमुच मृणाल थी -" मृणाल की मृणाल सी देह है -- कमल सी आँखे लंबी और तिरछी - उपयुक्त ही उसका नाम मृणाल रखा गया है।"[१] मृणाल सारा हिसाब किताब देखती थी। भाई को धन जुटाने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, परन्तु बहन उसे बढ़ाने में यत्न करती थी। उसे अटल के गरीबों के प्रति किये गये कार्यों मे कोई आकर्षण नहीं है, पढ़ाई-लिखाई में भी जुही ही उसकी सहायता करती है । उसकी सहायता से उसने बी.ए. तक अध्ययन किया था। अपनी सखी जुही को वह अपने घर ले आयी है। लेकिन यही जुही उसके लिए सिरदर्द बन गयी है। मृणाल का सौंदर्य पुरुषों को बाँध सकने में असमर्थ है। लेकिन जुही का साँवला साधारण सौंदर्य पुरुष को अपनी ओर बरबस खिंच लेता है।

"जुही-चन्दन सी सुगन्धित जुही-लड़के तो उसके पीछे यूँ आते जैसे दीप-शिखा पर परवाने साँवली है जुही, पीली-सी शरीर की बनावट भी सुंदर नहीं।"[२] जुही स्नेह और करुणा की मूरत है। उसका मन गंगा-समान पवित्र था। वह अटल-दादा के कार्यों मे अधिक रुचि लेती है। उनके साथ गरीबों के झोपड़ों में चली जाती है। वह सेवाभावी है। उसका हृदय स्नेहार्द्र है। इधर बसन्त जो अटल और मृणाल का आश्रित है, मृणाल उसके कोमल हृदयपर कठोरघात करती है। परंतु जुही उसके हृदय के घावों को सहलाती है। स्वभाविक रूप में बसना जुही की ओर झुकता है। यह देखकर मिनी ईर्ष्या से जल उठती है।

इस मुख्य-कथा के साथ दूसरी एक कथा चलती है। प्रिन्स कोयल एक रईस जमींदार है। उसे पाने के लिए मिनी छटपटाती है। कई पैंतरें बदलती है। इसके बावजूद भी मिनी उसे अपने आँचल में बाँध नहीं सकती। यह मुहरा भी उसके हाथ से निकल जाता है। प्रिन्स नीलू से विवाह कर लेता है। यह नीलू भी और कोई नहीं है, परंतु अटल-दादा की ही आश्रित है। अटल दादा ने उसे गुंडों के हाथों से बचाया था और अपने ही घर रखा था।

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : ६

२] वहीं : पृ. : २५.

अटल दादा जुहीपर जान निछावर करते हैं, जब यह बात चतुर मृणाल जान लेती है, तब आगबबूला हो उठती है। किसी प्रकार जुही को वहाँ से हटा देने का उपाय सोचती है।

इसी बीच जुही के घर से समाचार आता है कि उसकी माँ सख्त बिमार है। करुणामयी जुही जल्दही माँ के पास चली जाती है। माँ बिलकुल कृशकाय हो गयी है। अपनी क्षीण माता के दर्शन से जुही का हृदय द्रवित होता है। दो-चार दिन होने के बाद अटल वहाँ जाता है। अब वह जान लेता है कि जुही के बिना अधूरा है। जुही के पिता जुही के आते ही दो-चार दिन के लिए बाहर जाते हैं। पिता की अनुपस्थीति उसकी माँ की अंतिम साँस लेती है। इतने में उसके पिता का भी साम्प्रदायिक दंगों में देहान्त हो जाता है। माता-पिता के चले जाने से उसका जीवन अंधकारमय होता है। क्रियाकर्म होने के बाद सभी नीलू, बसन्त, मिनी, प्रिन्सस अटल घर जाने की सोचते है। जुही का भी सामान बाँधा जाता है। अटल जुही के पिता का कर्ज चुपकेसे चुका देता है। मकान के लिए भी किरायेदार तय कर लेता है। उसी रात सब सो जाते है। परंतु अटल की नींद तो हराम हो गई है। अटल अपने हृदय के किवाड खोलकर जुही के सम्मुख अपना मन-मानस खुला करना चाहता है। रात में वह चुपके से जुही के कमरे में चला जाता है, और संदेश देता है —"अब कल जाने के समय मैं यह नहीं सुनना चाहता कि तुम नहीं जा रही। तुम्हें मैं यहाँ किस सहारे पर छोड जाऊँ ?"[१] अटलने संदेशा सुनवाकर उसका माथा चूम लिया। अपने अव्यक्त प्रेम को व्यक्त किया। अपने हृदय की देवी की मूरत को सदा के लिए हृदय में अधिष्ठीत किया। फिर जुही सभी के साथ अटल के घर लौट आती है। इसी बीच नीलू और प्रिन्स एक धागे में बँध जाते है। प्रिन्स का हाथ से निकल जाना मृणाल के लिए तीव्र धक्का था। अनुपम रूपवती होकर भी वह किसी को पा नहीं सकी।

इसी बीच जुही और अटल भी सदा के लिए मिल जाते हैं। एक साधारण आश्रिता के लिए अटल-दादा सदा के लिए अपना बना लेते है। बेचारी मृणाल ही

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. :७७

अकेली रह जाती है। अक्खड एवं फक्कड स्वभाव की मृणाल अब बसन्त की ओर झुकती है। एक समय यही बसन्त मृणाल की एक दृष्टि के लिए तरसता था। तब मृणाल उसके हृदयपर घावों-पर-घाव डालती थी। लेकिन आज एक गरीब गाय की तरह उसके पैर चाटने में आतुर है। बसन्त मृणाल के यथार्थ रूप को पहचानता है, और समर्पण को ठुकराता है। मृणाल बसन्त से कहती है।

"अब हमारी बारी कब है ?"

बसंत दृढ़ता से उत्तर देता है —"शायद कभी नहीं।"[१]
इसी के साथ उपन्यास के कथानक का अंत हो जाता है।

ठोकर किसने किसे मारी यह एक विवाद प्रश्न लेखिकाने उपस्थित किया है। और सुज्ञ पाठकोंपर उसका निर्णय करने की जिम्मेदारी सौंप दी हैं।

२] "पानी की दीवार" :-

"पानी की दीवार" यह श्रीमती रजनी पनिकर की द्वितीय कृति है। यह उपन्यास बहुचर्चित है। "पानी की दीवार" की कथा रोमांच मनोवैज्ञानिक है, ऐसा कहे तो अत्युक्ति न होगी। कथा की नायिका नीना नरूला है। नीना नरूला अविवाहीत युवति है, जो शिमला में चित्रकला का अध्यापन कर रही है। शिमला आने के पूर्व ही उसके जीवन में राजकुमार आया था। राजकुमार अब स्वदेश छोड़कर विदेश चला गया है। राजकुमार और नीना एकसूत्र में बंध गये है। वस्तुतः उनका प्यार बाल्यकाल से था जो आयु के साथ पल्लवित और पुष्पित हो गया था। इसी प्रेम की परिणति अब विवाह के बंधन में तय हो गयी थी।

नीना शिमला आने के पश्चात जाने-अनजाने उसके जीवन में नया मोड उपस्थित होता है। नीना शिमला आकर दिलीप चौधरी के आकर्षक व्यक्तित्व से प्रभावित होती है। नीना पल-पल अपने को बचाने का प्रयत्न करती है। लेकिन उतनाही बरबस उसकी ओर खिंची जाती है। एकान्त नीना अपने आपको कोसती रहती है, अपने मोही मन की कटु-भर्त्सना करती है। क्योंकि दिलीप शादी-शुदा

१] रजनी पनिकर : ठोकर : पृ. : १०२.

आदमी है, उसकी एक फूल-सी बच्ची है। और उसका अपना राज भी है — "मुझे अपने से घृणा हो रही थी। मैं सोच रही थी, दिलीप में ऐसा कौनसा आकर्षण है जो मैं उसकी ओर खिंचती चली जा रही हूँ। बंधना कहना तो गलत होगा। मैं उसके व्यक्तित्व से इतनी प्रभावित होती जा रही हूँ, उसके विषय में सोचती हूँ। राज से भी अधिक उसके विषय में सोचती रह जाती हूँ।"[1]

इस उपन्यास में करुणा नामक और एक स्त्री पात्र है, जो दिलीप की पत्नी है। करुणा और नीना में मधुर संबंध है, दो बहनोंसा। दोनों घूमने जाती है, हँसती-खेलती भी हैं। नीना, करुणा के लिए कभी-कभी दुःखी हो जाती है, क्योंकि करुणा और दिलीप में कहीं कुछ अलगाव है, एक नदी के दोन किनारों के समान। नीना जब दिलीप से पूँछती है कि करुणा उसके व्यवहार का बुरा तो नहीं मानती, तो दिलीप उत्तर देता है — "उन्हे किस बात का बुरा लगेगा ? मैं उनकी प्रत्येक माँग को पूरा करता हूँ। और उनके अधिकारों से भी उन्हें कभी वंचित नहीं रखता।"[2] फिर भी नीना दिलीप को समझाती है, लेकिन वह नीना के हर सवाल का उचित समाधान करता है। नीना अपने आपको समझाते हुये मन-ही-मन सोचने लगती है —"यह कैसी विडम्बना है, हम अनजान में ही अज्ञात बंधनों से बंध जाते है, न चाहती हुई भी मैं दिलीप की ओर खिंची जा रही हूँ। किस लिए और क्यों ?"[3]

दिलीप नीना के कालेज में प्रिंसिपल के पदपर अस्थायी रूप में कार्य कर रहा है। वह भी नीना से प्रभावित है, लेकिन उनकी स्त्री है, करुणा, बच्ची है, गृहस्थी है। इसी कारण वह मर्यादाओंको पार नहीं कर पाता। वह कहता है — "वह मेरी पत्नी है। बस इतना ही क्या कम है। और मैं इस सत्य से भलि-भाँति परिचित हूँ कि वह मेरी पत्नी है। मैंने कभी प्रयत्न नहीं किया कि

1] रजनी पनिकर : पानी की दीवार : पृ. :९५.

2] वही : पृ.: ६५.

3] वही : पृ.: ११८.

अपने उत्तर दायित्व से इन्कार कर दूँ।"[1] दिलीप और करुणा में पारस्पारिक भिन्नता है, कहीं कोई संघर्ष नहीं, पर दोनों के मन में कहीं मिलता नहीं। दोनों उस वर्तमान समाज के प्राणी है जो मशिन की भाँति काम करते है। करुणा को जहाँ आमोद-प्रमोद, चहल-पहल, शान-शौकत से प्रेम है, वहाँ दिलीप एकांत प्रिय है, वह एक तरह से कलाकार है, दार्शनिक है।

करुणा एक ऐयाश औरत है। उसे अपने पति दिलीप के साथ घूमन-फिरना बहुत पसंद आता है। किन्तु दिलीप को ये बाते केवल बकवास लगती है। वह नीना के कहनेपर उसे "सेसिल" होटल, पहाडी मेले भी नीना और करुणा को ले जाता है। जिससे करुणा और उसका भाई केशव के मन में शंका आती है। केशव नीना को अपने प्यार में फसाने की कोशिश करता है, परंतु नीना केशव की कुवृत्ति देखकर उससे दूर रहने का प्रयत्न करती है। एक दिन दिलीप का परिवार और नीना "मशोबरा" घुमने जाते है, तो वापस शिमला आने के बाद करुणा के मन में और कुछ शंकाएँ घर करने लगती है। नीना समझती है, और राजकुमार का चित्र लाकर करुणा को देती है। तो करुणा राज का चित्र देखकर पुलक उठती है। वह खुशी से चमक उठती है। उसके मुखपर फुलावट, रंगत लौट आती है। वह कहती है——"तुम कितनी अच्छी हो नीना !"

"क्यों जी जी "?

"मैं केशव का मुँह बंद कर दूँगी, तुम जल्दी बतलाओ वह कहाँ है, क्या करता है ?"[2]

नीना करुणा से कहती है कि मेरा राज विदेश में है। अब लौटनेवाला है, परन्तु मन में सोचती है ——"राज की तसवीर को ही नहीं राज को भी करुणा, केशव को दिखला सकती है। उससे क्या होगा ? केशव का मुँह बंद हो जायेगा। परंतु दिलीप को मेरे हृदय से कौन निकलेगा ?"[3]

1] रजनी पनिकर : पानी की दीवार : पृ. : ११६.

2] वही : पृ. : १४७.

3] वही : पृ. : १४८.

नीना का दिलीप के प्रति आकर्षण बढ़ता जाता है, तो परिस्थितियाँ रूप धारण करती है। राज नया प्रिंसिपल बनकर कालिज आता है; और दिलीप कालिज का प्रधान अध्यापक न बनने के कारण वह कालिज छोड़कर चला जाता है। इसी प्रकार नीना का मानसिक संघर्ष तथा द्वंद्व स्वतः दूर जाता है।

इस उपन्यास में एक महाविद्यालय की अध्यापिका भी कौन-कौनसी समस्याएँ निर्माण करती हैं और उन समस्याओं को कैसे सुलझाती, इसका वर्णन लेखिकाने बखूबीसे किया है।

3] मोम के मोती :-

"मोम के मोती" रजनीजी का तीसरा उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा से ही लेखिकाने अपने उपन्यासों में नौकरी करनेवाली नारी की समस्याएँ चित्रीत करना आरम्भ कर दिया है।

इस उपन्यास की नायिका माया है, जो निम्नमध्यवर्गीय समाज में उत्पन्न होकर इतना साहस कर सकी कि सामाजिक रुढ़ियों की शृंखला तोडकर फेंक देती है। उसे अपने परिवार की चिन्ता है। उनके छोटे भाई-बहन है, उनको भरपेट खाना देना है, समय कहाँ है कि समाज की व्यंग्योक्तियाँ सुने।

पिता की मृत्यु के उपरान्त माया अम्बाला छोडकर दिल्ली आई, क्योंकि घर का खर्च विधवा माँ नहीं चला सकतीं। वह सेठ धनपति के यहाँ नौकरी करती है। माया की पैसों की चिन्ता दूर हो गई। चार वर्षों में सेठ ने चार सौ रुपये मूल राशि से प्रतिमास बढा दिये। परंतु माया को और एक चिन्ता सालती रही, वह थी, सेठ को दो हाथ दूर रखना। माया की इमानदारी और कर्तव्यपर सेठ खुश थे। वे माया को अपना बायाँ हाथ समझने लगे। सेठ ने कभी चाहा भी है कि वह माया के शरिर से खेल सके, तो माया ने केवल हाथ पकड़ने से बढ़कर उन्हें कोई प्रोत्साहन नहीं दिया।

माया की छोटी बहन छाया बड़ी हो गई, तो माँ ने उसके विवाह के लिए लिखा - माया ने रुपये, कपड़े, आभूषण आदि बनाए और अम्बाला आ गई। वहाँ लोग उससे व्यंग्य करने लगे — उनका आशय यही होता, कि लड़की केवल घृणित कार्य करके ही रुपया कमा सकती है। माया सुनती और सहती रही, क्योंकि उसे अपना भाई विलायत भेजना है। भाई सेठ की फर्म का प्रतिनिधि बनकर विदेश के कार्यालय में चला जाता है, तो माया अपने जीवन के बारे में सोचने कि चेष्टा करती है। उसके जीवन में मधुकर आता है, जो कमजोर और कायर पुरुष है, वह केवल कविता करना जानता है। माया उससे ऊब जाती है।

माया की सखी कला है, जो डाक्टर है। कला अमीर घर में पली है, जिसे कोई अभाव नहीं। कला का सुधाकर से विवाह होता है। छाया का विवाह भी उसकी माँ कर देती है, तो माया के दिल में यह अवश्य आता है कि छाया छोटी है, फिर भी माँ उसके लिए चिन्ता करती है। परंतु माँ ने एक बार भी यह नहीं कहा —"छाया ब्याही जा रही है, बारी माया की थी। परचलो, जैसी परिस्थिति हुई। माँ क्या सोचती है ? मेरा कोई अस्तित्व नहीं ? मैं शून्य हूँ। मेरी कोई इच्छा-अनिच्छा नहीं।"[१]

माया स्वयं को इस संसार में बहुत अकेली पाती है, क्योंकि चारोंओर इतने सारे मित्र - परिचीत होते हुए मन की बात सुननेवाला अन्तरंग मित्र कोई नहीं। उसे कभी-कभी कला के जीवन से ईर्ष्या हो जाती, जिसने बचपन से कभी दुःख, कष्ट, अभाव देखा तक न था। कला डाक्टर है, अच्छे-से-अच्छे स्कूल तथा कालिज में उसने शिक्षा पाई है। माता-पिता दोनों जीवित हैं, वह देखने में भी सुन्दर और सुगढ़ है। ऐसे में —"माया का मन भगवान से बदला लेने को उतावला हो उठा। उसका जी चाहा जोर-जोर से चिल्लाकर-कहे भगवान है कहाँ? मैं तुम्हें देखना चाहूँगी, मुझ से जो उपहास किया है तुमने, दुनिया में भेजा भी, तो न रूप न रुपया। यदि दोनों भी न देते थे, तो मुझे भाग्य

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. :१३०.

ही अच्छा किया होता। किसी की आँखें दिखाने की चिन्ता है, तो किसी की त्यौरियों की।"[१]

किन्तु माया अपना रास्ता स्वयं बना लेती है। बड़ा परिश्रम करती है, निर्धन स्त्रियों की देखभाल करती है, कार्यशील युवतियों को सहायता करती है। समाज की कड़ियाँ तोड़कर घर का बड़ा लड़का बनकर परिवार का सहारा बनती है।

कथा में मेजर कबाड़ नामक भी एक पात्र है, जो अपनी पत्नी का त्याग कर मन बहलाने के लिए इधर-उधर घूमता है। माया सोचती है —"कबाड़ केवल मन बहलाव के लिए माया के पास आता है, धनपति को अपना स्वार्थ है। माया का निजी मूल्य जाननेवाला इन दोनों में कोई नहीं।"[२]

कथा के अंत में आता है, राजन। राजन एक विधवा माँ का बेटा है, जिसे उसकी माँने बड़े कष्ट सहकर पाला-पोसा है। अब वह मजदूर सहायक संघ का नेता है, और शंकर मिल का वेलफेयर अफ्सर भी है। देश-विदेश में उसे लोग मजदूरों का नेता मानते हैं। वह माया से प्रेम करता है और अपनी माँ से परिचय करवाता है —"माँ, यह माया है, तुम्हारी होनेवाली बहू।"[3]

राजन माया को पत्नी रूप में स्वीकार कर समाज में उसे गृहिणी के उच्चासनपर बिठाता है। और सेठ धनपति का कर्ज लौटा कर छुडने के लिए से पास जाता है, जो मायाने अपने भाई को विलायत भेजने के लिए लिया था। परंतु सेठ राजन की माँ को पहचान कर रूपया नहीं लेते क्योंकि राजन उन्हीं का पुत्र है, सेठ के यौवन की एक भूल है।

उपन्यास की शैली रोचक और भाषा सरल है। अपने समय की एक जलन्त समस्या का चित्रण करता हुआ यह उपन्यास अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफल बन चुका है।

१] रजनी पनिकर : मोम के मोती : पृ. :७५.
२] वहीं : पृ. : ९५.
३] वहीं : पृ. :१६४.

४] प्यासे बादल :-

यह रजनीजी का चौथा उपन्यास है। इस में लेखिकाने एक बिलकुल आश्रयहीन, सडकोंपर घुमनेवाली, पुल के नीचे एक झोपडी बनाकर रहनेवाली युवति का वर्णन किया है। जैसे —"तुम्हारा नाम क्या है ?""रोजशीला""तुम रहती कहाँ हो ?""पुल के नीचे।"[१] वह मसीही धर्म की अनुयायी है। उसकी बुढ़ी माँ किसी धनी घराने में आया थी। उसी घर में रोजशीला की शिक्षा हुई। जब वह हाईस्कूल में पढ़ती थी, तब दुर्भाग्य से माँ की मृत्यु हुई।

इसी रोजशीला को लेकर इस उपन्यास की कथा चलती है। बन्धनों को बिलकुल न माननेवाली रोजशीला प्रेम में बंधती है और एकदम सुसंस्कृत नारी जैसी बदल जाती है। यही नहीं अराध्य देव के लिए बड़े से बड़ा त्याग करती है — "मैं तुम्हे भौतिक रूप से अपनी बनाना चाहता हूँ शीला।" "जयंत बाबू चरणरज का तिलक शोभा नहीं देता— मैं सदैव आपकी पूजा करती रहूँगी, आपका सौंपा हुआ काम करती रहूँगी।" "वह कौन सा ?" "बलराज बाबू की सेवा।" "बलराज के लिए तुम जीवन बलिदान करदोगी।" "नहीं अपने आराध्य देव की नीधि की देखभाल करूँगी।"[२] शीला स्वार्थ के लिए कोई नीच काम नहीं करती। भूख, अभाव, वेदना से परिमार्जित होकर वह ऐसे परिवेश में आती हैं, जिसे बड़े घर की बेला और कान्ता भी स्पर्धा करने लगती है।

शीला बहुत गरीब है। उसे न रहने के लिए न घर है, न सहारे के लिए चहार दिवारी। जब वह कुत्ते की प्लेट से रोटी चुराती हुई पकडी जाती है, तब जयंत उसे घर में शरण देता है। जयंत धनी परिवार का और रसिक प्रकृति का है। उसकी विदेशी दवाईयों की एक दुकान है। उस दुकान से उसे इतनी आय होती है कि वह दो-दो नौकर रखकर अच्छी तरह निर्वाह कर सके। फिर भी वह गंभीर है, क्योंकि उसके नाना की आज्ञा से उसकी मंगनी बेला से हो जाती

१] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ. : २०

२] वही : पृ. :१६६.

है। उसका कारण यह है कि वह पूँजीपति की बेटी है, और उसके नाम पर पचास हजार बैंक में जमा है। बेला रुपयेवाली तो है, परंतु सुगठित शरिर के स्थान पर कंकाल मात्र है। घर में जयन्त का एक छोटा भाई बलराज और जीवन संगिनी, दूर के रिश्ते की एक बहन कान्ता भी रहती है। उन सब का पोषण जयंत करता है।

बलराज अपाहिज है, उसकी टाँगे ऐसी जगह से कटती है कि कृत्रिम टाँगे भी नहीं लग सकती। वह उत्तेजना से काँपने लगता है, तो उसे फिट-सा आ जाता है और प्रतिक्रिया में बुखार चढ़ जाता है। कथा के अंत में जयंत उसे शीला के साथ छोडकर विदेश यात्रा के लिए अकेला जाता है। बेला अपने प्रसवकाल में ही ईश्वर की प्यारी हो गई, तब शीला, जयंत और बेला की बच्ची को बड़े स्नेह के साथ पालती है। कान्ता भी अपने पति के पास लौट जाती है।

इस उपन्यास की कथा मानवीय संवेदनाओं की कथा है। शीला के त्याग की और जयंत की सामाजिक मान-मर्यादा के लिए ही शीला के प्यार को ठुकराने की कथा है --"मेरे हृदय का ज्वालामुखी हृदय के भीतर भले ही मुझ झुलसा दे परन्तु कर्तव्य तो यही था कि आप जैसा अब करने जा रहे हैं, वैसा ही करते।"[१]

जयंत अपनी पत्नी बेला से प्रेम नहीं करता, फिर भी कर्तव्य निभाने के लिए अपनी इच्छाओं को संयत रखता है। दूसरी ओर शीला में नारी सुलभ भावनाएँ स्वतः ही उत्पन्न होती है। यह सब स्वाभाविक रूप में होता है। शीला को बुरे रास्ते पर ले जानेवाले ज्यादा है। बेला, कान्ता और बेला का भाई परेश उसे मार्गच्युत होने को कहते है। शीला की गरीब परिस्थितिने उसे भला-बुरा समझा दिया था। उसका आदर्श लेने लायक है। भिखारिन से एक सुसंस्कृत नारी बनकर वह पाठकों के दिलों-दिमागपर हवी हो जाती है।

अंत में नायक जयंत का अपाहिज भाई बलराज, अपाहिजों की समस्याओं पर बहुत-सा साहित्य पढ़ने के उपरान्त एक योजना बनाता है। जिससे अपाहिजों

१] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ. :१६५

की समस्या सुलझ सकें। जयंत यमुना के पार एक अपाहिजों का आश्रम बनवाता है। जिसके दो सम्भे शीला और बलराज है। बलराज शीला से प्यार करने लगता है। तो जयंत अपने भाई के जीवन में अंतिम बार प्रकाश और खुशियाँ लाने के लिए एक लम्बी विदेश यात्रा के लिए तैयार हो जाता है। शायद उसके पीछे बलराज शीला का मन जीत पाये। किन्तु शीला जयंत को विदा देते समय यही कहती है —"मैं नित्य आपकी प्रतिक्षा करूँगी मालिक।"[1] जयंत अपने हृदय में शीला के प्रेम का घाव और दर्द लिए प्रियजनों को छोडकर विदेश चला जाता है।

कथा में नायक-नायिका दोनों त्यागमयी; स्नेहमयी और आदर्शवादी चरित्र है। यह एक अनुठे त्याग की कथा है। शीला का त्याग, नायक जयंत का त्याग एक आदर्शवादी यथार्थ उपस्थित करता है।

५] <u>काली लड़की :-</u>

काली लड़की यह उपन्यास एक नूतन समस्या को लेकर लिखा है। इस कृति में नारी के दो रूपों को उद्घाटित किया है। लेखिकाने यह सिध्द किया है कि नारी के लिए केवल रूप की नहीं गुण की भी आवश्यकता है। रूप सौंदर्य का मोह क्षणिक होता है, इसी कारण सदा पुरूष को अपना बनाए रखने के लिए गुणों का होना नितान्त अनिवार्य है।

रानी की माँ गौरवर्णी थी, परन्तु दुर्भाग्य से उसने अपनी कोख से जिसे जन्म दिया, वह रानी काली-कलुटी थी। रानी की माँ के मन में एक नहीं अनेक शंकाएँ आने लगी, क्योंकि पुरे परिवार में रानी ही अकेली कुरूप थी। माँ और बहन कावेरी उससे कटु व्यवहार किया करती थी। इसी कारण रानी ने अपनी नौकरानी चांदी के घर आश्रय लिया। चांदी की निगरानी में वह पढ़ी और बड़ी हुई। रानी जितनी कुरूप थी, उतनाही अच्छा दिमाग भगवानने उसे दिया था। माँ पूरे साल में एक बार ही मिला करती जिस दिन परीक्षाफल

१] रजनी पनिकर : प्यासे बादल : पृ.:२५६.

घोषित होता था, और रानी सर्व प्रथम आने के कारण उसके मित्र आकर घर में बधाईयाँ देने लगते। रानी को अवहेलना, पीडा, वेदना के कडुए घूँट निगलने की और पचाने की आदत -सी हो गयी थी। रानी जीवन में कभी उदास होती तो चांदी ही कहती---"रानी बिटीया किसी दिन राजा की रानी बनेगी इन भावभरी बड़ी-बड़ी आँखो में कौन अपना भाग्य खोजना नहीं चाहेगा ?"[1] तो रानी के अंतर्मन को वे शब्द मलहम-पट्टी का कार्य कर जाते।

बहन कावेरी बड़ी हुई, तो माँ ने उसकी शादी बहुत-सा कर्जा लेकर दिल्ली के एक धनी व्यापारी कमलबाबू के साथ कर दी। कमल ने उसके साथ अवहेलनापूर्ण व्यवहार किया, तो वह रूठकर मायके चली गई। माँ के पास ही कावेरी के प्रथम सन्तान मुन्ना का जन्म हुआ। कमल बाबू कावेरी को लेने आये तो माँ ने मुन्ना को दत्तक ले लिया और पुत्र - सन्तान की कमी पूरी की। उसी समय रानी बी.ए. हो चुकी थी। रानी के परीक्षाफल से कावेरी बहुत खुश हुई। और रानी को [illegible] अपने साथ लेकर दिल्ली चली - एम.ए. करवाने के लिए। दिल्ली में उसकी सखी-सुंदरी से भेंट हो गई।

दिल्ली आकर रानी ने जाना कि कावेरी का जीवन उतना सुखी नहीं है। क्योंकि कमलबाबू की बहुत-सी प्रेमिकाएँ है, जिन्हे वह होटलों में रखते है। पति रंगीन मिजाजी निकला। अपने घर की देवी को ठुकराकर वह औरों के पीछे पड़ा रहा। इसीकारण कावेरी का जीवन तितर-बितर हो गया। कावेरी ने अपना एक अलग रास्ता तय किया। अब कावेरी कमल के टुकड़ोपर पलनेवाले फाल्तू नौकर धीरेन्द्र से प्यार करने लगी। घर में तनाव रहने लगा। कावेरी इसी बीच गर्भवती हो गयी और डाक्टर की राय से पानी बदलने के लिए शिमला आ गई। साथ में रानी और धीरेन्द्र भी आए।

कमलबाबूने कुछ दिनों बाद सुन्दरी को भी छोड़ दिया। सुंदरी शिक्षिका की नौकरी करने लगी। एक दिन सुन्दरी एक चित्र-प्रदर्शनी में रानी को ले गई।

1] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ.: ३

चित्रकार ने रानी को जबरन एक चित्र खरीदवाकर घर भेज दिया और उसका बिल कमलबाबू के पास भेज दिया। कमलबाबू ने रानी को पत्र लिखा —"रानी तुम्हें पैसे की आवश्यकता हो तो कावेरी से माँगने की आवश्यकता नहीं, मुझसे माँग लेना।"[१] पत्र पढ़कर कावेरी ने रानी के मुँहपर तमाचा लगाया और बरसते पानी में घर से निकाल दिया। रानी सुन्दरी की जगह शिक्षिका की नौकरी करने लगी, क्योंकी सुंदरी बच्चों के चाचा के साथ भाग गई थी।

कावेरी शिमला से फिर दिल्ली आई। कमलबाबूने रानी को भी दिल्ली बुलवाकर संसद सदस्य के फ्लैट में उसे रख दिया। घर का किराया केवल वह चुका देते थे। रानी ने पैसे के लिए कमलबाबू के सामने कभी हाथ नहीं फैलाये। रानी ने चाँदी के जेवर, अपनी पूँजी, रोटी-कपड़ा जुटाने में ही खत्म कर दी। वह छोटे-मोटे काम भी करती रही। परंतु विपत्ति कभी अकेली नहीं आती।

कावेरी और माँ ने मिलकर कमल को परेशान कर दिया था। कावेरी की पर पुरुषों की संगति और बढ़ता हुआ खर्च देखकर उसे भूलाने के लिए कमल शराब पीकर इधर-उधर घुमता हैं। और शांति पाने के लिए उन्हे इंग्लैंड भेजने की सोचता है। कावेरी और कमल में झगड़ा होता है, तो कावेरी फुलदान कमल के सिरपर मारती है। कमल बेहोश हो जाता है। रानी समाचार पाते ही आती है, क्योंकि कावेरी और माँ विलायत जा चुकी है। रानी पिता को भी तार द्वारा सूचित कर बुला लेती है। कमल और रानी एक दुसरे के साये में प्रेम-सुख और शांति पा जाते है। कमल को जिंदगी में सर्व प्रथम रानी के रूप में एक निस्वार्थी, निरागस, शील-चारित्र्य से संपन्न नारी मिलती है। रानी को कमल के रूप में पुरुष का प्यार और सहारा मिलता है। कमल रानी के सरल, सरस और उदार स्वभाव को पाकर कहता है —"रानी मैं अब तक नहीं जानता था, कि किसी नारी का सुन्दर होने के लिए गोरा होना आवश्यक नहीं। तुम साँवली होकर भी कितनी सुन्दर हो।"[२] कमल की बाते सुनकर रानी भावविभोर हो उठती है, तो कमल एक स्थानपर फिर

१] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : ७७.

२] वही : पृ. : १३०.

कहता है :— "नहीं, रानी तुम हो, ममता की रानी, प्यार की रानी, वह केवल गोरी है। संगमरमर के पत्थर की तरह। उसके पास हृदय नहीं है। अगर है तो उसमें धड़कन नहीं।"[१]

कमल ने अपनी मन की भटकन का अंत रानी की बड़ी-बड़ी आँखों और लम्बे-लम्बे बालों पर मिटा दिया। वह रानी के साथ लखनऊ जाकर रहने लगे। कावेरी और माँ ने विदेश में ही अपना घर बसाया। रानी की माँ ने भी पति से मुक्ति पाकर वहाँ विवाह कर लिया। रानी अंत में सोचती है — "कावेरी तो इस इरादे से विदेश गई ही थी, माँ भी।"[२]

सचमुच उपन्यास पढ़ते ही मन बौखला जाता है। पुरुष अगर स्वैराचार करता है, तो हमारा मन उसका स्वीकार करता है। लेकिन भारतीय संस्कृति में कावेरी और उसकी माँ जैसी भी स्त्रियाँ होती है। इसका स्वीकार करने में मन को यातनाएँ होती हैं। नारी शील, गुण, चारित्र्य से संपन्न होती है। त्याग की प्रतिमूर्ति है परंतु आधुनिक सभ्यता के रंग में रंगी ऐसी नारियों को देखकर मन अस्वस्थ होता है। फिर लेखिकाने रानी के चरित्र -द्वारा असीम त्याग, निस्वार्थ, निरागस प्रेम को साकार करके यह सिद्ध किया है कि पुरुष के दिलपर कब्जा करने के लिए केवल रूप की नहीं गुण की आवश्यकता होती है। स्वैराचारी और स्वार्थी नारियाँ अपने विनाश के बीज स्वयं बो देती है। परंतु त्यागमयी, ममतामयी, चारित्र्यवान स्त्रियाँ जाने-अनजाने उत्कर्ष की ओर बढ़ती है।

६] <u>जाडे की धूप :-</u>

"जाडे की धूप" यह रजनी जी का छटा उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखिकाने आधुनिक नारी के निजी सामाजिक जीवन के संघर्षों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया है। इस उपन्यास की नायिका भारती है, जो पति और प्रेमी दोनों की ओर पूरी सफाई और इमानदारी से अपना कर्तव्य

१] रजनी पनिकर : काली लडकी : पृ. : १२८.

२] वहीं : पृ. : १५०.

निभाना चाहती है। परंतु इन्हीं के बीच वह स्वयं पिस-पिस कर टूट जाती है। इसी भारती की व्यथा इस उपन्यास की कथा है।

"जाडे की धूप" उपन्यास की नायिका भारती है। उसके पति एक डाक्टर है। और बेटा टीपू है, जो देहरादून स्कूल में पढ़ता है। भारती और पवन में हरदम अनबन मच जाती है। दोनों एक-दूसरे को समझने की कोशिश नहीं करते। आखिर बात यहाँ तक पहुँचती है कि दोनों एक-दूसरे से अलग रहने लगते है। पवन नया फ्लैट लेकर रहने लगता है। भारती को कभी घर का खर्च देता है, कभी नहीं। भारती एयर बुकिंग आफिस मे काम करके अपना खर्च चलाती है और उन्हीं से टीपू को भी कुछ पैसे भेजती है। इस मशीनी जीवन में एकाएक एक दिन भारती की नजर अजयपर स्थिर होती है। अजय बुकिंग आफिस में ही काम करता है। अजय का आकर्षण भारती झेल नहीं पाती, उसे समर्पित हो जाती है, केवल मन से, शारीरिक रूप से नहीं —"तुम्हारा सम्मोहन कम नही है। कोई भी नारी क्या खाकर तुम्हे छोड़ेगी, वह इतनी शक्ति कहाँ से लाएगी कि तुम से दूर हट जाय। नहीं यकीन आता तो आओ मेरी धडकनों को सुनों।" [१]

अजय का सौंदर्य और आकर्षण भारती के लिए नित्य नई-नई समस्याएँ खडी कर देता है। उसका हृदय अजय का प्रेम पाकर इतना कोमल हो जाता है कि — "मैं जहाँ भी दुःख देखती हूँ, आँसू देखती हूँ, मेरा मन द्रवित हो उठता है। मुझे लगता है कि उस व्यक्ति विशेष का दुःख मेरा अपना दुःख है।" [२]

भारती बचपन से ही भावुक संवेदनशील और कल्पनाशील रही है। जब कालिज में थी तो सदैव उसका मन रंगीन कल्पनाओं की उड़ाने भरता था। और वह अपनी बुआ की बेटी मालती से कह बैठती है —"न जाने मुझे किसकी प्रतिक्षा है। तो मालती पवन, विनय का नाम लेती है, तो भारती उसे टकासा उत्तर देते हुए कहती है'—"मैं नहीं जानती मालती, मेरे मन में एक छाया है, मैं उसी के साथ रहती हूँ, सोती हूँ और स्वप्न देखती हूँ।" [३]

१] रजनी पनिकर : जाडे की धूप : पृ. : १८

२] वहीं : पृ. : १८

३] वहीं : पृ. : १६

ऐसी कल्पनामयी, संवेदनशील और भावुक भारती ने अजय में उस छाया के दर्शन किये। भारती सुध-बुध खो बैठी, लेकिन भारतीय नारी परम्परा के बंधन तोड ही कहाँ पाती है? जैसी उसकी चेतना को कोई चाबुक मारकर कहता है -- "कहाँ भटक रही है पगली। खूँटा छोडकर गाय भागती है।" [1] यदि नारी पति को छोडकर स्वेच्छा से प्रेमी के साथ भाग जायेगी तो भारतीयता की नींव हिल जाएगी। सीता-सावित्री का आदर्श व्यर्थ हो जाएगा। परंतु भारती अपनी भावनाओं का क्या करेगी --"पूर्णत्व प्राप्ति के लिए बेचैनी और कसमसाहट। मन के सायँ-सायँ करते। एकाकीपन से निपट पाने के निरंतर प्रयास के सम्मुख कर्तव्य और इमानदारी के बौने से लगते हैं।" [2]

भारती ने अंतिम क्षण तक कर्तव्य और इमानदारी को नहीं छोडा। न वह पवन [पति] को छोड पाई, न अजय[प्रेमी] को। वह उसे भले ही छोड गये तब भी उसकी --"भावनाओं का खून हुआ या वे धूल में मिली, उससे क्या। वर्जित प्यार का फल ऐसा होना ही था।" [3]

इस उपन्यास की दूसरी कथा है मालती की, जो भारती की सखी है। भारती अनाथ है, उसका लालन-पालन मालती की माँ तथा उसकी बुआ ने किया है। मालती का पति धनवान है, उनके दो बच्चे भी हैं। लेकिन उसका पति उसे सच्चा प्यार नहीं दे सकता। रात दो बजे से पहले कभी घर नहीं आता। बेचारी मालती घर की चहार-दिवारी में पड़ी रहकर पति का इंतजार करते बैठती। मालती देखने में सुंदर है, फिर भी पति को प्रसन्न नहीं कर पाती। जीवन में उसका काम केवल ठंडी आहें भरते-भरते भाग्य को कोसना है। कथा में और भी कुछ गौण पात्र है जैसे - मलकानी, झाबवाला आदि।

कथा में भारती का प्रेमी अजय है, वह चाहता है कि भारती एक फैसला कर ले या इस पार या उस पार --"किसी एक की तो हो जाओ, पवन की होकर

१] रजनी पनिकर : जाडे की धूप : पृ. : १६.

२] वही : पृ. : २६

३] वही : पृ. : ११८

रहो, तो मैं अपना रास्ता नाप लूँगा। मेरी हो रहो, तो पलकोंपर बिठाकर रखूँगा।" [१]

प्रस्तुत उपन्यास में भारती-पवन की कथा प्रधान है। उस प्रधान कथा का प्रासंगिक नायक अजय है। लेखिकाने भारती के चरित्र के द्वारा यह दिखलाने का प्रयास किया है कि भारतीय नारी कितनी भी भटक जाय उसे भारतीयत्व की याद आती है। इसके साथ मालती के चरित्र द्वारा यह सिद्ध किया है कि भारतीय नारी कल की तरह आज भी अभागन है।

७] <u>एक लडकी-दो-रूप :-</u>

रजनीजी का यह सातवां उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका माला है। माला सामाजिक बन्धनों को तोडकर अपने ही तय किये हुये रास्ते पर चलती है। वह कहती है—"मेरा नाम माला है, यह नाम मुझे जांचता नहीं। मैं फूलों की माला की तरह नाजुक नहीं हूँ। न उस माला की तरह हूँ, जो अभी-अभी माली के हाथों बनाई गई हो, किसी देवता को चढ़ाने के लिए। आजकल देवता भी फूल माला की बजाय नोटों की माला पसन्द करते हैं। पुरुषों की क्या कीमत—फूलों का क्या मोल।" [२]

इस प्रकार यह कथा माला के दो रूपों की कथा है। रजनी जी ने आधुनिक नारी को रोजी-रोटी के लिए किस तरह विवश होकर नौकरियाँ करनी पड़ती है, और आधुनिक समाज का "कल्चर" और "टैस्ट" क्या है, उसमें नारी को क्या अभिनय करना पडता है, इस का सजीव वर्णन लेखिकाने इस उपन्यास में किया है।

माला घर की बड़ी लडकी है। परिवार में माता-पिता, सरोज बहन, रवि भाई और अचला भाभी भी है। पिता कुछ पैसे नहीं कमाते। भाई भी कई नौकरियाँ बदल चुका है और अब सुबह-शाम समाचार पत्र बेचने का काम करता है।

१] रजनी पन्निकर: जाडे धूप : पृ. : ६५.

२] रजनी पन्निकर : एक लडकी-दो-रूप : पृ. : ५.

सरोज की अभी पढ़ाई चल रही है। हाँ, माँ सिलाई-कताई का काम करती है। कथा में माला का मित्र अमित भी है।

माला की शादी बहुत पहले पिताजीने तय की थी। लेकिन थोडा दहेज देखकर बटोर गई थी। तब से माला के मन में एक कुंठा निर्माण हुई और वह भीतर-ही-भीतर टूट गई। आज वह तीस-बत्तीस साल की हो गई है। नौकरी करती है क्योंकि परिवार का दोनों समय का भोजन चल सके। माला के खेलने-खाने के दिन थे। परंतु कडी मेहनतने माला को बहुत गुस्सैल बना दिया है। वह कहती है —"मेहनत करते-करते न जाने मुझे क्या हो जाता है। ऐसा गुस्सा आता है जैसे सोडे की बोतल में तुफान आ गया हो। जाने इतनी बदमिजाज क्यों हो गई हूँ ? पहले तो ऐसी न थी। अब तो बात-बात में झल्ला पडती हूँ। यह कहना तो मेरा तकिया कलाम हो गया है, हर बात का मैंने ठेका लिया है।" [१]

इस प्रकार ... एक व्यर्थ का एहसास एक हीन भावना माला को सताती है और वह झुंझलाकर घरवालों पर बरस पडती है। परंतु क्या वह उन घरवालों को छोड सकती ? यह और एक बात है कि वह मन बहलाने के लिए राजू के साथ घूमने-फिरने जाती है और मन ही मन सोचती हुई कहती है —"इतना तो मैं जानती हूँ की ऐसा प्रेम दो व्यक्तियों के एकाकीपन से शुरू होता है और वह जल्द ही समाप्त हो जाता है। एकाकीपन का इलाज प्रेम नहीं है।" [२]

माला सोच-समझकर भी राजू से प्यार करती है। वह जानती है कि राजू शादी-शुदा है, उन्हें बीवी के साथ दो बच्चियाँ भी है। परंतु वह अपने नारी मन से विवश है —-"सोचती हूँ ठीक तो है मैंने उसे प्यार किया है, उसमें विशेष बात क्या है ? एक नारी ने एक पुरुष से प्यार किया है।" [३]

एक दिन वह सेठ कनोडिया के घर प्राइवेट सेक्रेटरी का काम करने लगती है। उसे पाच सौ रुपया महीना वेतन और रहने के लिए मकान तथा उनके पिता के लिए एक पुरानी गाडी भी सेठ ने दे दी। निर्धन परिवार के लिए यह बहुत बड़ा आकर्षण

१] रजनी पनिकर : एक लडकी-दो-रूप :पृ.: ६

२] वहीं : पृ. : ९४

३] वहीं :पृ. :११०

पाकर माला के पिताजी ने सेठजी के साथ मिलजूल कर गड्‌ढी कर दी । माला को दिन के चौबीस घंटे काम करना पडता, घर का सारा काम करके और बाहर के शॉपिंग, मीटिंग आदि सब जिम्मेदारियाँ सँभालनी पडती थी। वह काम करते-करते थक जाती, किन्तु घरवालों को आराम करते देखती तो मन में राहत मिलती।

अंत में माला के पिता सेठ के साथ एक गलत काम करते पकड़े जाते हैं और अपमानित होने के कारण आत्महत्या करते हैं। माला नौकरी छोडकर भाई के साथ अपने घर चली जाती है। केवल घर रहकर बच्चों की ट्यूशन करने लगती है। वह सोचती है ---"सोचती हूँ इन्ही दीवारों को तोड घर से जब मैं बाहर गई थी, तो मैंने सामाजिक बन्धनों की दीवार भी तोड देनी चाही थी । गुडिया को गरिबी बुरी लगती थी, उसे बाहर की चमचमाती दुनियाँ पसन्द थी।" [१]

कथा के अंत में माला ने भीतर की गुड़िया को काबू में किया है। अब उसके जीवन की बागडोर गुड़िया के हाथ में नहीं है।

८] तीन दिन की बात :-

"तीन दिन की बात" यह लेखिका का आठवाँ उपन्यास है। यह उपन्यास घटना-प्रधान है, जिसकी कथा का काल केवल तीन दिन हैं। इस कथा की नायिका शशि है, जो पढ़ी-लिखी तैंतीस-चौंतीस बरस की युवति है। वह एक ऊँचे पदपर कार्य कर रहीं है और उसी के संदर्भ में वह एक साक्षात्कार लेने के लिए दिल्ली से कलकत्ता जाती है और वहाँ अपने पिता के स्वर्गीय मित्र के घर ठहरती है। उस घर में गौरादेवी और उनके तीन पुत्र अमल, राजू, और निर्मल रहते हैं। अमल पिता की मृत्यू के उपरान्त घर का व्यवसाय देखता है। वह केवल बी.ए. तक ही पढ़ा है। राजू एम्.ए. का छात्र है, निर्मल मैट्रिक की परिक्षा देनेवाला है। गौरादेवी अपने तीनों पुत्रों से बहुत स्नेह करती है।

गौरादेवी के घर में और एक बुलू नामक लडकी है, जो उनके स्वर्गीय ड्राइवर की एकलौती संतान है। बुलू आठवीं कक्षातक पढ़कर घर के कामकाज में सहायता करती

१] रजनी पनिकर : एक लडकी-दो-रूप : पृ. : १०९.

पडोस की दो लडकियाँ संध्या और लल्ली भी गौरादेवी के घर आती रहती है। संध्या अध्यापिका है, वह निर्मल से पढ़ाई के विषय में कुछ न कुछ समझाने के बहाने अमल के पास आती है। लेकिन प्रत्यक्ष अमल के साथ बातें नहीं कर पाती। निर्मल को माध्यम बनाती है। परंतु सभी समझ चुके है कि वह अमल को लेकर कुछ भ्रम पाले हुए है। गौरादेवी अमल से पूछती है —"क्यों कोई आश्वासन दिया है तुमने ? नहीं माँ, मैंने तो कभी उससे आमने-सामने बात भी नहीं की है। आज पहला ही दिन है, वह मुझसे बोली है, मैं उसको कैसा आश्वासन देता।" [1]

इसी प्रकार राजू का ललिता से सम्बन्ध है। उनके संबन्ध को सभी जानते है और दोनो शादी करने के लिए इच्छुक भी है। ललिता के पिता इसके लिए गौरादेवी के पास आ भी चुके है। गौरादेवी शशि से भी कहती है —"शशि तुम्हारी क्या राय है? लडकी राजू को पसंद है, तो फिर देर क्यों करती है।"[2]

शशि के आनेपर अमल और राजू अपने विचार बदल डालते है। अमल तो शशिपर आसक्त होकर कह उठता है —"मुझे तुमने पागल कर दिया।" [3] यह बात वह उससे बार-बार कहता है। राजू भी शशि के पूछनेपर अपने मन को टटोल कर कह देता है कि ललिता से विवाह नहीं करना। राजू की माँ भी समझ जाती है कि अमल और शशि एक-दूसरे के निकट आये है। तभी अमल को हैदराबाद से बिजनिस मैनेजमेंट की ट्रेनिंग में तुरंत उपस्थित होने का आदेश मिलता है। उसका मन डावाँडोल हो उठता है। वह और शशि अंगुठियों का आदान-प्रदान कर एक दूसरे के प्रति जैसे समर्पित हो जाते है।

इस उपन्यास की कथा जब चरम-सीमापर आती है तब नया मोड लेती है। संध्या और लुलू मिलकर शशि को काफी में जहर दे देती है। शशि आधा प्याला पीकर ही चित्त हो जाती है। डाक्टर आते है, शशि के पिता को फोन करके बुला लिया जाता है, सात घण्टो के अथक परिश्रम के बाद शशि को बचाने में डाक्टरोंको

1] रजनी पनिकर : तीन दिन की बात : पृ. : २०५.

2] वहीं : पृ. : १५१.

3] वहीं : पृ. : १५३.

सफलता मिल जाती है। तो गौरादेवी शशि के पिता से कहती है।—"बिटिया का नया जन्म इस घर में हुआ है, अब, आप यह बेटी मुझे दे दें अमल के लिए।"[१] तो शशि के पिताने शशि के साथ नोटों का एक बण्डल भी गौरादेवी के झोली में डाल दिया ।

कथा में अंत तक उत्सुकता बनी रहती है, जो रजनी जी की विशिष्टता है।

९] महानगर की मीता :-

"महानगर की मीता" यह लेखिका का नवता उपन्यास है। इसमें रजनीजीने नारी के अपूर्व साहस की गाथा का वर्णन किया है। उपन्यास की नायिका मीता प्रेम-विवाह करती हैं। पिता और भाई नहीं चाहते कि वह अजित से विवाह करे, क्योंकि अजित की डाक्टरी की पढ़ाई अभी चल रही है, और उसके चरित्र में कुछ असाधारणता दिखाई देती है। भाई कहता है, जो व्यक्ति आँख मिलाकर बात नहीं कर सकते, वे अवश्य कुछ न कुछ अप्रत्याशित कर गुजरते हैं।

मीता ने अजित के साथ शादी कर ली। और एक साथ तीन नौकरियाँ करने लगी। घर का कामकाज भी वहीं देखती थी। अजित को डाक्टर बनाना उनका एकमात्र उद्देश्य था। अजित को न माता-पिता थे, न भाई-बहन और कोई हो तो भी उनका पता उसे मालूम नहीं था। इसी कारण मीता का हृदय उसके के लिए दया, सहानुभूति और ममता से भर गया। जिसे उसने प्रणय समझा। इसी बीच मीता गर्भवती हो गई, और अजित अभी फाइनल की परिक्षा में बैठनेवाला था। वह मीता से नफ़रत करने लगा। जिसे मीता मुस्कराकर टालने की चेष्टा करती —"कभी-कभी मुझे बुरा भी लगता कि यह अजीब बात है, प्रेम करेंगे, विवाह करेंगे। बच्चों के आगमन को बीमारी समझेंगे।"[२] फिर मिता सोचती कि नौकरी न होने से ऐसा है।

अजित डाक्टर हो गया। उसे लखनऊ में सर्जन की नौकरी भी मिल गई। परन्तु नौकरी और बढ़ाने की चिन्ता उसके मन में सालती रही। उसे मीता से दिन में एक बार भी हँसकर बात करने का समय नहीं रहता। जैसे कि मीता को भूल

१] रजनी पनिकर : तीन दिन की बात : पृ. :२२७.

२] रजनी पनिकर : महानगर की मीता :पृ. : २९

गया। फिर अजित के जीवन में एक विदेशी ग्रेसी आती है। वह ग्रेसी छः महिने के लिए भारत आई थी। डाक्टर अजित उसका दीवाना हो गया और मीता से बोला —"मुझे तलाक चाहिए —तलाक, मैं ग्रेसी से प्रेम करता हूँ। मैं ग्रेसी से विवाह करना चाहता हूँ।" [१]

मीता की आँखों के आगे अन्धेरा छा गया। उसे, उसकी आत्मा को, उसके अहम् को इतनी ठेस लगी कि उस वातावरण में उसका साँस लेना भी कठिन हो गया। फिर भी मीता भारतीय परंपरा में पली नारी है, लेकिन वह परम्परा की जंजीरों से मुक्त होना चाहती है —"मैं बीसवीं सदी में सीता नहीं बन सकूँगी, क्या अजित राम है ? वह सब कुछ होते हुए भी मर्यादा के लिए अभाव से तडपते रहे। यह सब कुछ होते हुए भी उसको ठुकराकर अधिक के लालच में तड़प रहा है। उसे तलाक चाहिए। मैं दूँगी उसे तलाक।" [२] मीता ने लोकलाज का लिहाज उतार दिया और अजित को छोडकर पिता के घर आ गई और मन ही मन सोचने लगी —"हम लोग दिखावे के लिए आधुनिक है। पुरूष वर्षों से नारी को छोडता आया है, यदि नारी पुरुष को छोड दे, तो उसे सन्देह की दृष्टि से क्यों देखा जाता है।" [३]

मेजर प्रबीर मीता की भाभी के भाई है। वे मीता के दुःख से कातर होकर उससे शादी करना चाहते है। लेकिन मीता के हृदय को अजित से तलाक लेने के कारण पत्थर-सा कठिन बनाया था। वह गुस्से में आकर प्रबीर से कहती है —"मुझे किसी की दया की आवश्यकता नहीं। और मैं रोती हुई बाहर जाने लगी तो प्रबीर मेरा हाथ पकडकर लक्ष्मी की मूर्ति के पास ले गया। मैं इस देवी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं तुम पर दया नहीं कर रहा, बल्कि मैं तुम्हारी दया का मोहताज हूँ। जिस दिन तुम मेरी बनोगी, वहीं दिन मेरे जीवन का सौभाग्यशाली दिन होगा। मुझे गलत मत समझो मीता। मुझे पुरुषों पर विश्वास नहीं।" [४]

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. : ५५.
२] वहीं : पृ. : ५७.
३] वहीं : पृ. : ६३.
४] वहीं : पृ. : ६३.

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

परंतु मेजर प्रबीर के साहस, विनय और प्रतिक्षा ने गीता के मन का आवरण हटा दिया। अजित उसे लेने आया तो झूठा भ्रम का जाल देखकर तार-तार हो गया। गीता जान गई, अजित वह पुरुष नहीं है —"अजित अजनबी है, पर पुरुष है। वह प्रबीर की हो गई।"[1]

कथा में बीसवीं सदी की नारियाँ, पति से तलाक मिलने पर भी अपना दुबारा ब्याह करके घर बसा सकती है। इसका वर्णन करने में लेखिका सफल हो गई है।

१०] सोनाली दी :-

"सोनाली दी" यह रजनीजी का दसवाँ उपन्यास है। इसमें एक शिक्षित युवती की कहानी है, जो बंगाली है। परंतु उसका परिवार शिमला में है। पिताजी कभी दिल्ली में भी रहा करते थे। तो सोनाली ने एम्.ए. और संगीत वहींपर ही सीखा था। वह मामा के घर कलकत्ता आती है, किन्तु मामा उसे पहचानकर भी विदेशी पत्नी के सामने नहीं पहचानतें। इसी कारण सोनाली को लड़कियों के होस्टेल में रहना पड़ता है।

एक दिन जीवनदास, संपादक "नई रोशनी" अपने पत्र में नौकरी के संदर्भ में विज्ञापन देते है —"एक अठारह वर्षीय ग्रेजुएट लड़की के लिए एक गार्डियन व ट्यूटर की आवश्यकता है। बड़ी आयु की हिन्दू या "ब्राह्मो" महिलाएँ ही प्रार्थना पत्र भेजें। भोजन और निवास का प्रबन्ध रहेगा, साथ डेढ़ सौ रुपया मासिक दिया जाएगा।"[2]

जीवनदास केवल संपादक ही नहीं बल्कि समाज सुधारक भी है। उनके बेटी का नाम रानू है। वह आधुनिक चंचल युवति है। उन्हे लड़के-लड़कियों के साथ सम्मिलित पार्टी देना, बीयर और सिगरेट पीना और पिताजी के घर न होनेपर पश्चिमी संगीत की धुनों पर नाच करना बहुत पसन्द आता है। पिता की उपस्थिति में वह अभी तक अपने मित्रों को घर नहीं बुला पाई। क्योंकि पापा उन सबको पसन्द नहीं करते, रानू सोचती है —"जो समाज सुधारक है,

---

१] रजनी पनिकर : महानगर की मीता : पृ. : ६३.

२] रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : ७

जिनके पत्र में विधवाओं के पुनर्विवाह के विज्ञापन प्रकाशित होते है, नये लेखकों को सहारा दिया जाता है। वही लेखक यदि घर आ गए तो गुण्डे बन जाते है।" [1]

रानू की माँ रानू के बचपन में ही भगवान की प्यारी हो गई थी। इसी कारण रानू प्रकृति से बड़ी स्वतंत्र और निर्भीक है। वह सोचती है —— "माँ न होने से बचपन से जरा-सी चिंतनशील थी। आयु के साथ-साथ मेरा चिंतन कम होता जा रहा है। दस मिनट भी मैं ध्यान एक वस्तुपर केंद्रित नहीं कर पाती। पढ़ूँ ? सो जाऊँ ? नये स्टाईल के केश संवारूँ ? नये "कोप" वाली ड्रेसरी ट्राई करूँ ? क्या करूँ ? ——— पहले मेरी दशा ऐसी नहीं थी। मैं दिल लगाकर स्कूल का काम करती। घर का काम करती। बच्चों के लिए जो "बुक आफ नालेज" है वह पढ़ती। काली माँ के साथ कभी-कभी मन्दिर चली जाती। अब तो वह सब बकवास लगता है। उन सब में जी नहीं लगता। क्या करूँ? क्या नहीं करूँ ?" [2]

जीवनदास रानू की देख-रेख के लिए सोनाली को रख लेते हैं। रानू को अच्छा नहीं लगता, वह पूछती भी है ——"आखिर पापा आज दस वर्षों बाद मुझे साथिन की आवश्यकता कैसे पड़ गई ?" [3]

सोनाली ने गार्जियन ट्यूटर का काम अच्छी तरह सँभाला। रानी की दादी-माँ सोनाली को जीवनदास की बहू ही समझती है, और सोनाली की सूनी माँग देखकर वह सिन्दूर लगाने की जिद करती है। सोनाली दादी-माँ के भोजन के समय प्रति दिन सिन्दूर लगाती और फिर धो डालती है। इसे भी वह नौकरी का एक भाग समझती है। कथा में जीवनदास का बचपन का साथी महिम और उनकी विधवा बहन ममता भी है। महिम अविवाहित है तथा उनका एक नाटक का थियेटर भी है। रानू उसे मन हीमन पूजती है, किन्तु अंत में वह एक कवि इंद्रजित से प्यार करने लगती है।

---

१) रजनी पनिकर : सोनाली दी : पृ. : ९.
२) वही : पृ. : २.
३) वही : पृ. : ८.

सोनाली अपने धैर्य और परिश्रम से रानू का विश्वास पा लेती है। जीवनदास उसे मन-ही-मन प्यार करने लगता है, तो महिम भी उसकी ओर झुकता है। उसे अपनी नाटक में नायिका का पार्ट देता है, परन्तु ममता अपना स्थान छिनता हुआ देखकर सोनाली से ईर्ष्या करती है। तो सोनाली सभी समस्याओं पर मात करके जीवनदास के मन में सदैव के लिए घर बना लेती है।

इस उपन्यास में रजनीजीने पाश्चात्य संस्कारों के कारण तथा आधुनिकता के कारण आधुनिक किशोरियाँ किस तरह पतन की ओर झुकती है यह रानू के माध्यम से दिखाने की कोशिश की है। साथ-ही-साथ अपने वर्तमानकालीन समाज का चित्रण उन्होंने बड़ी चतुरता से किया है।

११] <u>बदलते रंग :-</u>

यह लेखिका की ग्यारहवीं कृति है। इस उपन्यास में रजनीजी ने समाज के प्रत्येक पहलू के बदलते रंग पर दृष्टि डाली है। इस बदलती हुई सामाजिक परिस्थिती का बड़ा ही रोचक तथा विस्तृत चित्र हमारी आखों के आगे सजीव करने में रजनीजी को अद्भुत सफलता मिली है।

"बदलते रंग" इस उपन्यास की नायिका आशा है, जो गरीब तो है, अनाथ भी है। उसे एक परिवार गोद ले लेता है, किन्तु वहाँ भी भाग्य साथ नहीं देता। पिता की मृत्यु हो जाती है, माँ लोगों के कपडे सी कर या फूल काढ कर अपनी बेटी को बड़ा करती है। आशा बी.ए. तक पढ़ी-लिखी है।

आशा की सखी लक्ष्मी है। लक्ष्मी की मौसी का लडका राघवन आई.ए.एस. अफसर है, वह आशा के अभूतपूर्व सौंदर्य से प्रभावित होकर आशासे प्यार करता है, तो लक्ष्मी आशा को उनके असली रूप का पता बताती है। आशा कहती है, यह बड़े लोग केवल रुपयों-पैसों से ही जीते जा सकते हैं। आशा राघवन के प्यार का स्वीकार नहीं करती। इसी बीच एक शिक्षिका के लिए विज्ञापन निकलता है कि समृद्ध घराने में लडकियों को पढाने के लिए अध्यापिका की आवश्यकता है, वेतन डेढ़ सौ रुपया, साथ में भोजन और निवास का प्रबंध रहेगा।

आशा की नियुक्ति हो जाती है और वह दिल्ली से दूर दार्जलिंग चली जाती है। उस परिवार में दो लड़कियाँ है, आसावरी चौदह साल की और विभावरी बारह साल की, जिन्हें आशा को पढ़ाना है। घर में उन बच्चिओं की माँ मालकिन है और उनका सौतेला बेटा विवेक चौधरी है, जो मालकिन से दो-तीन बरस छोटा है। मालकिन पुराने अमीरों के भाँति रहती है -खाना और सोना। अफीम का सेवन भी करती है, घर-गृहस्थी और बच्चों की उसे कुछ भी चिंता नहीं। उन्हें अपने विवाह की भूल सालती रहती है। आशा को वह मास्टरनी बाई कहकर रोबली आवाज में बुलाती है, मालकिन और नौकर की दूरी रखती है। विवेक मात्र आशा से सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता है।

एक दिन चौधरी परिवार पिकनिकपर जाता है। आशा भी साथ है। वहाँ राघवन से भेंट होती है। राघवन डिप्टी कमिश्नर होकर वहाँ आया है। राघवन और आशा की मित्रता पाकर मालकिन आशा के प्रति एकदम बदल जाती है। और उसे अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी बना लेती है। राघवन के द्वारा रूप कुमारी मालकिन दार्जलिंग के बहुत से नये लोगों से मिलती है, जिसमें रोशन गुलाबवाला है, जो अमीर लड़कियों को पारंगत बनाती है और घर की सजावट भी सिखाती है। रूप कुमारी अब मालकिन नहीं रहीं। उसने बाल कटवा लिए है, सिगरेट पीती है और शराब पीने को भी बुरा नहीं समझती। वह रोशन गुलाबवाला से किसी प्रकार भी कम नहीं रहना चाहती। उसके पुरुष मित्रों में राघवन है, एक कर्नल है, किन्तु उसे इससे भी ऊँचे पदवाले की खोज है। तो आशा कहती है ---
"आजकल वह कौन है, जो इस बात का ख्याल करता है कि वह बाहर जा रही है। इसलिए कोई उसके साथ जाना चाहिए। छोटों को बड़ों का हुक्म मानना चाहिए या कुछ इसी तरह की चीज आज का जमाना अपने आपके आगे करने का जमाना है।"[1]

इधर विवेक और राघवन दोनों आशा से प्रेम करते हैं किन्तु आशा स्थिर है, निर्णय नहीं कर पाती-फिर भी विवेक का प्रभाव अधिक रहता है। मालकिन के आधुनिकता का प्रभाव आसावरी पर होता है। वह भी लैफ्टीनेन्ट भास्कर के साथ घूमने-फिरने लगती है।

१] रजनी पनिकर : बदलते रंग : पृ. : १५१.

A
12000

कथा में विनोद भी है, जो रोशन गुलाबवाला से कुछ सामान खरीदने भारत आया है। रूप के साथ उसके सम्बन्ध होते हैं। रूप विभावरी [बच्ची] को लेकर विनोद के साथ कहीं बाहर चली जाती है। बीच में विनोद और उनकी पत्नी दोनों को पुलिस हिरासत में ले ली जाती है, क्योंकि विवेक के सात हजार और गंगटोक के मन्दिर से चुराई मूर्तियों को विदेश भेजने के अपराध में पकड़े जाते हैं।

राघवन विवेक को कहता है कि रूप कलकत्ता में ग्रेंड होटल में है। विवेक जाकर माँ और बहन को ले आता है। रूप की दो हीरे की दो अँगूठियाँ भी विनोद गायब करता है। इधर विवेक और आशा का तथा राघवन और लक्ष्मी का ब्याह पक्का हो जाता है।

लेखिकाने बड़ी सीधी सरल और सहज भाषा में हमारी बदलती हुई संस्कृति का चित्र खींच दिया है। विशेषकर धनवान या अभिजात लोगों की गिरी हुई सभ्यता का वर्णन करने का सफल सायास रजनीजी ने इस उपन्यास में किया है।

१२] <u>दूरियाँ :-</u>

"दूरियाँ" रजनी पनिकर का बारहवाँ और अंतिम उपन्यास है।

"दूरियाँ" में प्रमुख दो नारी पात्र है, जो विद्रोही हैं। इस बदलते समाज में, नगरों में, और महानगरों में कैसी-कैसी जिन्दगियाँ लोग जी रहे हैं और इन सब के सन्दर्भ में नारी की समस्याएँ और इन से बढ़कर उनकी सोचने तथा विचार [illegible] करने की शक्ति उसे किस ओर तक ले आई है — यही इस उपन्यास की कथा है।

चारु और नमिता दो सखियाँ हैं। एक दूसरे को बचपन से जानती, एकसाथ खाती, खेलती और पढ़ती थी। चारु सामाजिक बंधन में नहीं रहती। उसका मीतर यश उससे विवाह नहीं कर सका क्योंकि वह नागालैंड में एक आदिवासी लड़की के बच्चे का बाप बनता है और उसी के साथ शादी भी करता है। यश ने भावावेश में किए गए अपने कर्म को कर्तव्य का जामा पहना दिया। परंतु दो जीवन इस कृत्य से झुलस कर रह गये।

चारु अब किसी भी पुरुषपर विश्वास नहीं करती। कमल के साथ दो-चार महिने रहने के बाद उसे भी टालने लगती है। इसी प्रकार आनंद, रब्बी साहनी, अमर और देवेश है। परंतु वह किसी एक के साथ घर बसाने के तैयार नहीं है —— "कमल को लेकर भावुक होने का सवाल नहीं था। कमल के पास ऐसा कुछ नहीं था जिसकी जरूरत चारु जैसी लडकी को पड़ सकती है। या खुद चारु की जरूरतें बदल गई थीं, दोनों ही स्थितियों में ठीक था।"[१] तो ये चारु का रंगीला रूप देखकर लोग बाते करते जैसे —"रब्बी मिला था। कह रहा था आजकल एक नया मुर्गा फांस रही है", या, "राज मिला था, आजकल किसी स्टैंडर्डवाले के साथ घूमती है।" कभी, "स्टैंडर्ड से उब गई है। अब उसने एम्बेसेडर से समझोता कर लिया है।"[२]

किन्तु चारु को किसी की परवाह नहीं थी। नमिता समझाती तो कहती —" मैं तो जानती हूँ शादी मुझे एक से करनी है। —— सारे के सार तो मेरे इशारों पर नाचते हैं। एक मैं भी "गदल" है ? पुरुष को पुरुष होना चाहिए। पालतू कुत्ता नहीं। जो हर वक्त दुम हिलाता रहे।"[३] अंत में एक दिन यश आकर चारु की करुणाजनक दशा देखता है, उसकी बदनामी कानों से सुनता है और एक दिन मोटार एक्सीडेंट में उसकी मृत्यु हो जाती है। जैसे उसका झगडा, उसकी लड़ाई यश से ही थी, वह नहीं तो लड़ाई कैसी ?

दूसरा नारी पात्र है नमिता। वह घरबार, भाई-बहन, माँ छोडकर एक विवाहित विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हरी के साथ बिना विवाह किए रहती है। हरी तो एक बच्चे का बाप है। नमिता उसीसे शादी करना चाहती है, उनके बच्चे की माँ बनना चाहती है। लेकिन हरी ऐसे नहीं होने देता, क्योंकि उसका पत्नी के साथ तलाक का मुकद्दमा चल रहा है। जब तक कानूनी तौरपर वह पत्नी से तलाक नहीं तब तक दूसरी शादी नहीं कर पाता। तो नमिता अपने मातृत्व का जन्मसिध्द अधिकार बताती है ——"हरी अगर राजी होता तो कुँआरी माँ बनने में भी नमिता को कोई एतराज नहीं था।"[४]

१] रजनी पनिकर : दूरियाँ : पृ. : ५९.
२] वहीं : पृ. : ६१.
३] वहीं : पृ. :१११.
४] वहीं : पृ. : ६५.

नमिता संपन्न परिवार की लडकी होते हुए भी हरी का दामन नहीं छोडती। हरी की विधवा बहन और उनके पाच बच्चों की देख-देख भी वही करती है। उनके खर्च के लिए दोन-दो, तीन-तीन नोकरियाँ करती है। इतना परिश्रम करने पर भी वह हरी की पत्नी नहीं केवल "रखैल" है। इसी बीच दोनों में मन-मुटाव भी होता है। परंतु नमिता फिर हरी के पास लौट आती है। हरी का बच्चा नमिता के पास ही रहता है, क्योंकि उसकी माँ दूसरी शादी कर रही है। बच्चा नमिता के गोद में खेलता-कूदता है, तो नमिता सब पा लेती है। स्त्री माँ बनकर ही पूर्ण है, नहीं तो अधूरी है। यह दिखाने का प्रयास रजनीजी ने इन उपन्यास में किया है।

निष्कार्ष :-

स्वातंत्र्योत्तर युग में उपन्यास लेखन के क्षेत्र में जिन महिलाओं ने जागरुक दृष्टि का परिचय दिया है, उनमें रजनी पनिकर का स्थान अग्रणी है। उन्होंने बारह उपन्यासों का सृजन किया है। उनका प्रत्येक उपन्यास नारी जीवन से संबंधित है। ऐसा महसूस होता है मानो रजनी के उपन्यास वर्तमान समाज की नारी की ओर चक्कर काटते है। और नारी जीवन के विविध पहलूओं को उकसाने में क्रियाशील रहते है।

रजनी के प्रथम उपन्यास "ठोकर" में एक उच्च-मध्यवर्गीय परिवार की कथा है, जिसमें अटल और मृणाल दोनों भाई-बहन रहते है। और उस परिवार में अटल के मुनिम का बेटा बसन्त रहता है। मृणाल की एक सहेली जुही भी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण वहीं पर रहकर एम्. ए. का अध्ययन कर रही है। अटल जुही के साथ जुड़ जाते है। लेकिन मृणाल बसन्त को नौकर बेटा समझकर उनका दिल तोड देती है, लेकिन जब कोई उच्चवर्गीय मुहरा हात नहीं आता तो वह कथा के अंत में बसन्त से ही पुछती है, तो बसंन्त भी उनका प्यार ठुकराता है। कथा में मृणाल इष्यालू, धनलोलुप और गर्व से उन्मत नारी दिखाई देती है। तो अटल समाजसेवी और निस्वार्थी दिखाई देता है। रजनी जी ने इस उपन्यास की कथा में उच्च-मध्य

और निम्न वर्ग का चित्रण करने में सफलता पाई है।

"पानी की दीवार" में नीना के मनोविज्ञान पर रजनी ने प्रकाश डाला है। नीना अध्यापिका बनकर दिल्ली से शिमला कालेज जाती है तो उसके मन-मस्तीष्क में अपने सहकारी अध्यापक दिलीप बस जाता है, तो वह अपने मंगेतर राज के साथ दिलीप की तुलना करके वह स्वयं टूट-टूट जाती है। लेकिन राज जब वहाँ नया प्रिंसिपल बनकर आता है और दिलीप प्रधानाध्यापक न बनने के कारण वहाँ से चला जाता है, तब नीना का मानसिक द्वन्द्व अपने आप मीट जाता है।

"मोम के मोती" में एक कार्यशील नारी का चित्रण हुआ है। माया अपनी आर्थिक स्थितिपर काबु पाने के लिए सेठ धनपति के यहाँ नौकरी करती है, तो समाज के नजरों में वह गिर जाती है। उन्हे सेठ की "रखैल" भी कहने में समाज पीछे नहीं रहता, लेकिन वह अपना कर्तव्य निभाती है। नौकरी करके घर-गृहस्थी चलाती है और छोटी बहन छाया की शादी का खर्च भी स्वयं इकट्टा करके उनकी शादी करवाती है। और अपने भाई को भी विलायत भेजती है। कथा के अंत में वह राजन के साथ अपनी गृहस्थी बसा लेती है। इस कथा में एक नौकरी पेशा नारी कि ओर समाज तथा पुरुष वर्ग किस तरह हीन दृष्टि से देखता है, इसका स्पष्टता से वर्णन लेखिकाने किया है।

"प्यासे बादल" उपन्यास में जयन्त और रोजशीला की मुख्य कथा है। जयन्त एक समाज सेवाभावी युवक है। वह शीला को कुत्ते की प्लेट से रोटी चुराते समय देखता है और उसे अपने घर में आश्रय देता है। शीला भी जयन्त के प्यार और स्नेह से एक अवारा, आश्रयहीन लडकी से सुसंस्कृत और सुसभ्य नारी बन जाती है। लेकिन वह दोनों अपने-अपने सिध्दांतो के कारण एक-दूसरे से अपना नहीं सकते। रजनी जी ने एक भिखारी वर्ग की युवति को कथा की नायिका बनाकर हिन्दी उपन्यास साहित्य में अपना एक अलग स्थान बना रखा है।

"काली लडकी" इस उपन्यास में लेखिकाने एक काली-कलूटी लडकी रानी को कथा की नायिका बनाया है। और पुरी कथा उनके इर्द-गिर्द घूमती हुई दिखाई देती है।

समाज में रूप को कितना महत्व दिया जाता है और स्वयं अपनी माँ भी कुरूप लडकी से कैसा व्यवहार करती है उसका वर्णन बडा सुंदर ढंगसे हुआ है। लेकिन अपनी तेज बुद्धि के कारण रानी की अपनी जय दिखाई है। कमल जैसा रंगीन मिजाजी भी रानी के सहयोग से स्थिर हो जाता है। और रानी को अपना बना लेते है।

"जाडे की धूप" यह डायरी शैली में लिखा हुआ उपन्यास है। इसमें भारती के अंतर मन के संघर्ष को उजागर करने का रजनी ने प्रयास किया है। भारती शादी-शुदा युवती है जो अपने बेटे को लेकर पति पवन से अलग रहती है। वह नौकरी करके अपना खर्च स्वयं चलाती है तो उनकी नजर एक दिन अपने आफिस के सहकारी अजय पर स्थिर होती है। वह अजय से प्रेम करने लगती है। लेकिन पति पवन को नहीं भूलती। तो उनके मन में उन दोनों को लेकर संघर्ष चलता है। वह अंत में पवन की ही बनी रहती है।

"एक लडकी-दो रूप" में माला के दो रूपों की कथा है। उनके घर से जब उनकी शादी में थोडा दहेज देखकर बारात वापस चली जाती है और माला की शादी टूट जाती है तब से उनके मन में और एक गुड़िया निर्माण होती है और माला दो रूपों में दिखाई देती है। यही इस उपन्यास की कथा है।

"तीन दिन की बात" यह घटना प्रधान उपन्यास है। उसमें शशि नामक एक युवति है जो उम्र से तैंतीस-पैंतीस की हो चुकी है। नौकरी करती है, और उन्ही के संदर्भ में साक्षात्कार लेने दिल्ली से कलकत्ता जाती है तो उनके पिताजी के स्वर्गीय मित्र के यहाँ वह ठरती है। उस परिवार में अमल, उनके भाई और उनकी माँ रहते है। तो सिर्फ तीन दिन में वह अमल के साथ जुड़ जाती है। और उस समय जो समस्याएँ निर्माण हो चुकी है उनका भी वर्णन लेखिका ने किया है।

"महानगर की मीता" उपन्यास में टूँटे हुए प्रेम विवाह कि कथा है। अजित डॉक्टरी की पढाई कर रहा है और वह मीता से प्रेम करके विवाह करता है। मीता स्वयं नौकरी करके उसे पढाई में मदद करती है और जब अजय डॉक्टर बन जाता है तब मीता से तलाक देता है। और डॉ. ग्रेसी से शादी करता है, जो विदेश से आई है, लेकिन कुछदिनों बाद जब ग्रेसी भी उन्हें छोडकर स्वदेश लौट जाती है तब अजय मीता को लेने आता है परन्तु मीता उसके साथ नहीं लौटती क्योंकि वह मेजर प्रबीर से जुड़ गयी है। तलाक समस्या का वर्णन अतिव सुंदरतासे और सफलतासे लेखिकाने इस कृति में किया है।

"सोनाली दी" इस उपन्यास में आधुनिक पीढी पर एक तीव्र और प्रखर व्यंग्य कसता हुआ यह उपन्यास अपने उद्देश्य को भलीभाँति पूर्ण करता है। रानू का चरित्र हमारी नई पीढ़ी और पाश्चात्य संस्कृति एकदम खो बैठा है। लेकिन उन्हें संवारने-समझाने की कोशिश सोनाली करती है। सोनाली, रानू का विश्वास पा लेती है और अपने करतूत से जीवनदास को भी अपना बना लेती है। रजनी ने पश्चात्य संस्कृति और भारतीय संस्कृति की तुलना रानू और सोनाली के माध्यम से की है और भारतीय संस्कृति को ही श्रेष्ठता दी है।

"बदलते रंग" उपन्यास में हमारे यहाँ का धनवान या अभिजात वर्ग किस प्रकार सच्ची शिक्षा से दूर रहकर पश्चिमी सभ्यता अपनाकर अपने आप को खो देता है। यह लेखिकाने श्रीमती चौधरी के परिवार के माध्यम सेक दिखाया है। लेकिन आशा जब शिक्षिका बनकर उनके घर नौकरी करने लगती है तो उस घर का मुखौटा बदल देती है। भारतीय संस्कार में पली नारी का शिक्षण देकर पश्चिमी संस्कृति का पर्दाफाश करती है

"दूरियाँ" उपन्यास में नमिता और चारु इन दो सखियों की व्यथा ही इस उपन्यास की कथा है। नमिता प्रो. हरी से प्रेम करती है। जो शादी-शुदा आदमी है। और वह उसे पत्नीत्व देने में असमर्थ है। लेकिन नमिता जब गर्भवती हो जाती है तो हरी से कुआँरी मातृत्व का अधिकार माँगती है। तो चारु अपने मंगेतर यश से प्रेम भंग होने के कारण सामाजिक बंधन की बेडियाँ तोडकर अपने मनचले रास्तेपर चलती है। इस कथा के दोनों ही नारी पात्र विद्रोही महसूस होते है। लेकिन कथा के अंत में जब यश का एक्सीडेंट में मृत्यू हो जाती है, तो चारु विजय के साथ शादी करती है और हरी को भी अपनी पत्नी से तलाक मिलता है तो वह भी नमिता को अपनाता है। इस कथा में लेखिका को इस दृष्टि की ओर संकेत करना है कि स्त्री माँ बन कर ही पूर्ण है नहीं तो अधूरी है।

अंत में इतना ही कहना उचित होगा कि लेखिका के मन में कुछ सामाजिक आदर्श है, जिन से भटकनेवाले पात्रों की प्रवृत्तियों का चित्रण तिक्त व्यंग्य शैली में हुआ है। विषय का इतिवृत्तात्मक उल्लेख मात्र उन्होंने नहीं किया है। उन्होंने मानव मन के विविध पहलूओं की व्याख्या की है तथा नारी की विवशताओं और उसके उत्तरदायी पात्रों की स्वार्थपरता के सफल चित्र अंकित किए है।

x—x—x—x—x